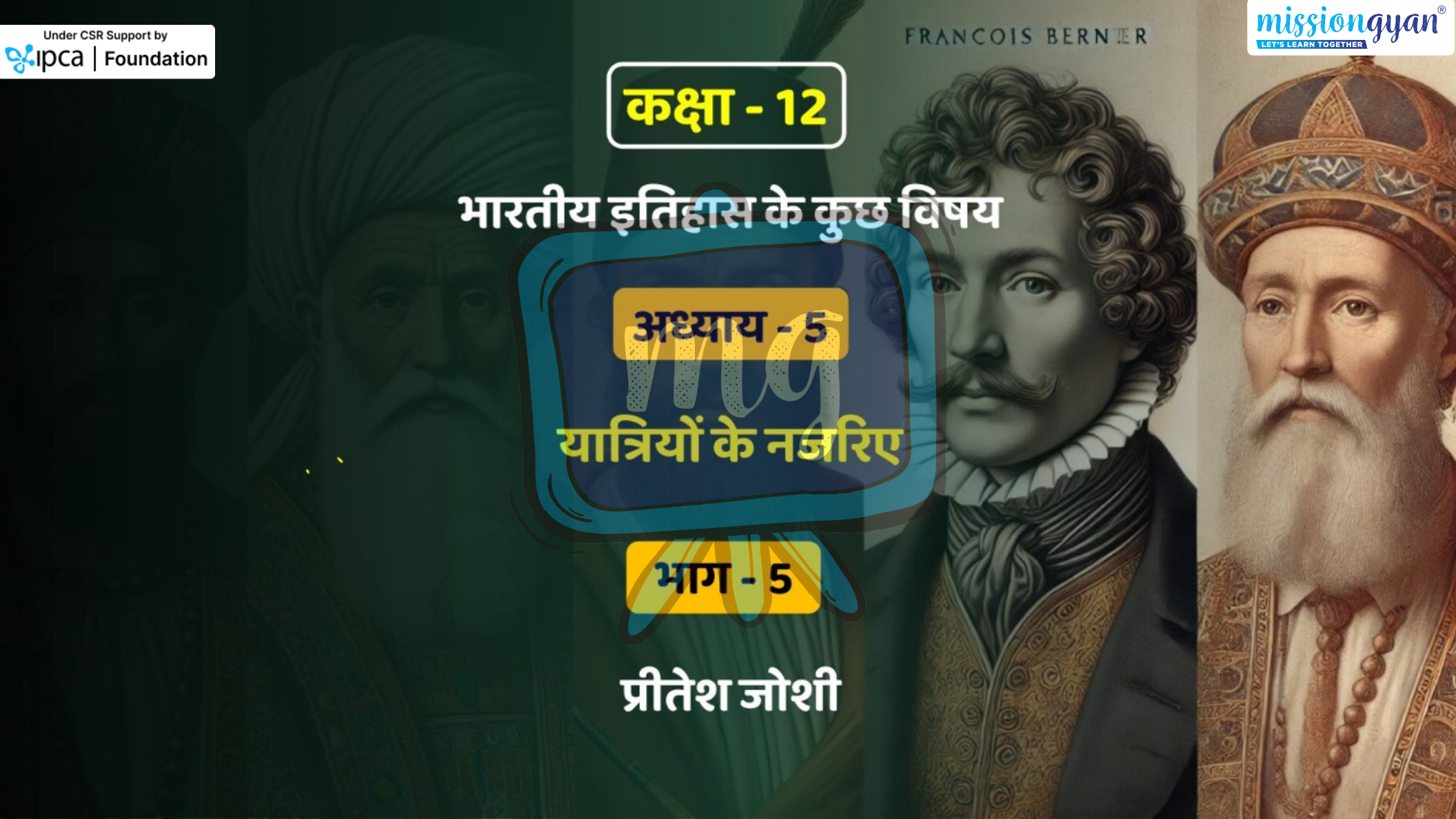
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 5

यात्रियों के नजरिए

भाग - 5

प्रीतेश जोशी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. फ्रांस्वा बर्नियर की किताब ?

a) ट्रेवल्स इन मुगल एम्पायर

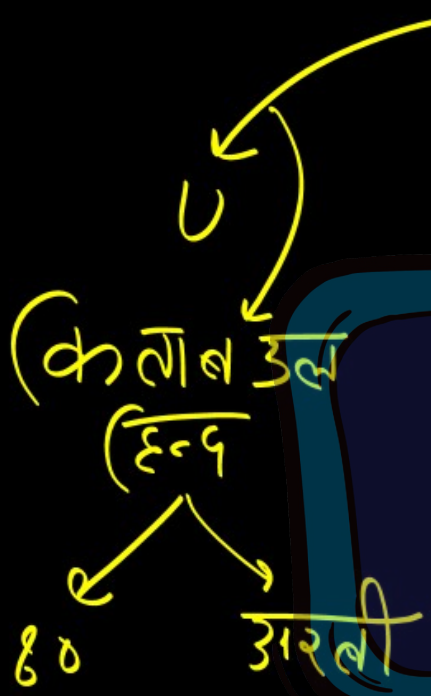
b) रिहला

c) इंडिया - अ मुगल गेम

d) NOTA

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



अल-बिरूनी का जाति व्यवस्था का विवरण

- अन्य समुदायों में प्रतिरूपों की खोज के माध्यम से जाति व्यवस्था को समझने व व्याख्या करने का प्रयास किया।
- उसके अनुसार प्राचीन फारस में चार सामाजिक वर्गों को मान्यता थी
  - घुड़सवार और शासक वर्ग
  - भिक्षु, आनुष्ठानिक पुरोहित तथा चिकित्सक
  - खगोल शास्त्री तथा अन्य वैज्ञानिक तथा
  - कृषक तथा शिल्पकार

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



तुलना

- उसने यह दिखाने का प्रयास किया कि सामाजिक वर्ग केवल भारत तक ही सीमित नहीं थे।
- उसने यह भी दिखाने का प्रयास भी किया कि इस्लाम में सभी लोगों को समान माना जाता था उनमें भिन्नता केवल धार्मिकता के पालन में थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

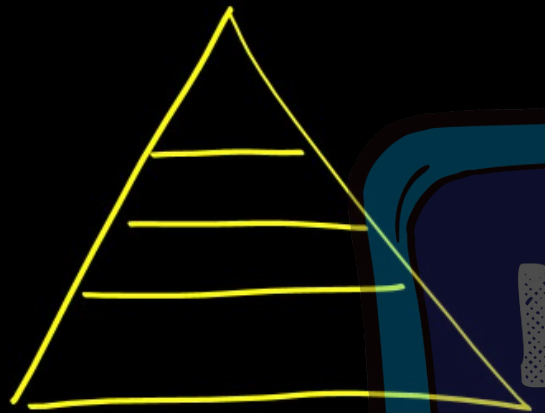
फारस्य

9. अपवित्रता।

- जाति व्यवस्था के सम्बन्ध में ब्राह्मणवादी व्याख्या को माना, परन्तु
- अपवित्रता की मान्यता को अस्वीकार किया– "हर वस्तु जो अपवित्र हो जाती है, अपनी पवित्रता की मूल स्थिति को पुनः प्राप्त करने का प्रयास करती है और सफल होती है।"
- वह जाति व्यवस्था में सन्निहित अपवित्रता की अवधारणा को प्रकृति के नियमों के विरूद्ध मानता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



वर्ण व्यवस्था

- अल-बिरूनी ने भारतीय वर्ण व्यवस्था का वर्णन निम्नानुसार किया है-

1. ब्राह्मण = अल बिरूनी के अनुसार ब्राह्मण सर्वोच्च वर्ण था।
   = उत्पत्ति आदि देव ब्रह्मा के मुख से
   = मुख का स्थान सबसे उच्च माना गया है।
   = इसी कारण हिन्दु जाति में सबसे उच्च स्थान दिया गया है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



2. क्षत्रिय = क्षत्रियों की उत्पत्ति आदिदेव ब्रह्मा के कन्धों व हाथों से।

= मुख के बाद द्वितीय स्थान कन्धों व बाहों का है।

= वर्ण व्यवस्था में ब्राह्मणों के बाद द्वितीय स्थान पर रखा गया है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



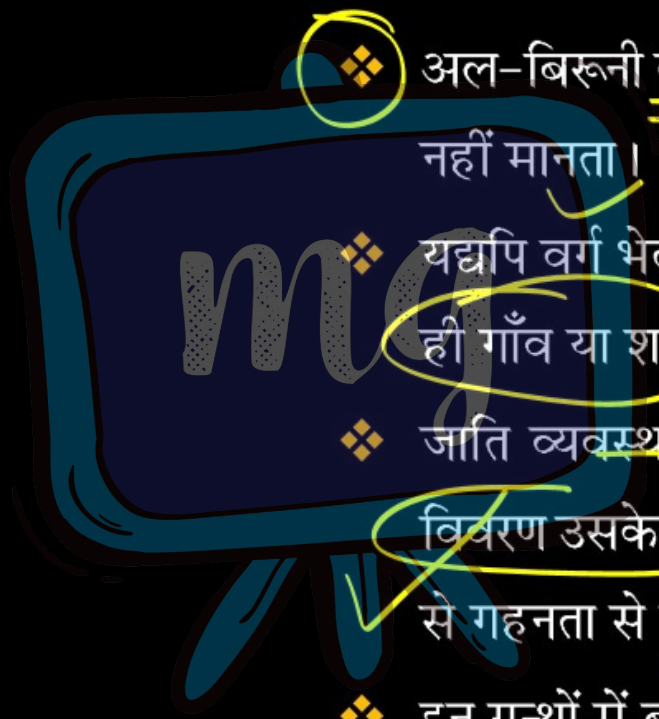
3. वैश्य = वैश्य वर्ण की उत्पत्ति आदि देव ब्रह्मा के उदर व जंघा से मानी जाती है।

4. शूद्र = शूद्र वर्ण की उत्पत्ति आदि देव ब्रह्मा के चरणों से मानी गई है।

= वर्ण व्यवस्था में अंतिम चतुर्थ स्थान दिया गया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- अल-बिरूनी वैश्य व शूद्रों के मध्य अधिक अन्तर नहीं मानता।
- यद्यपि वर्ग भेद था फिर भी सभी लोग एक साथ ही गाँव या शहर में समरसता के साथ रहते हैं।
- जाति व्यवस्था के विषय में अल-बिरूनी का विवरण उसके नियामक संस्कृत ग्रन्थों के अध्ययन से गहनता से प्रभावित।
- इन ग्रन्थों में ब्राह्मणों के दृष्टिकोण से जाति प्रथा को संचालित करने वाले नियमों का प्रतिपादन किया गया था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

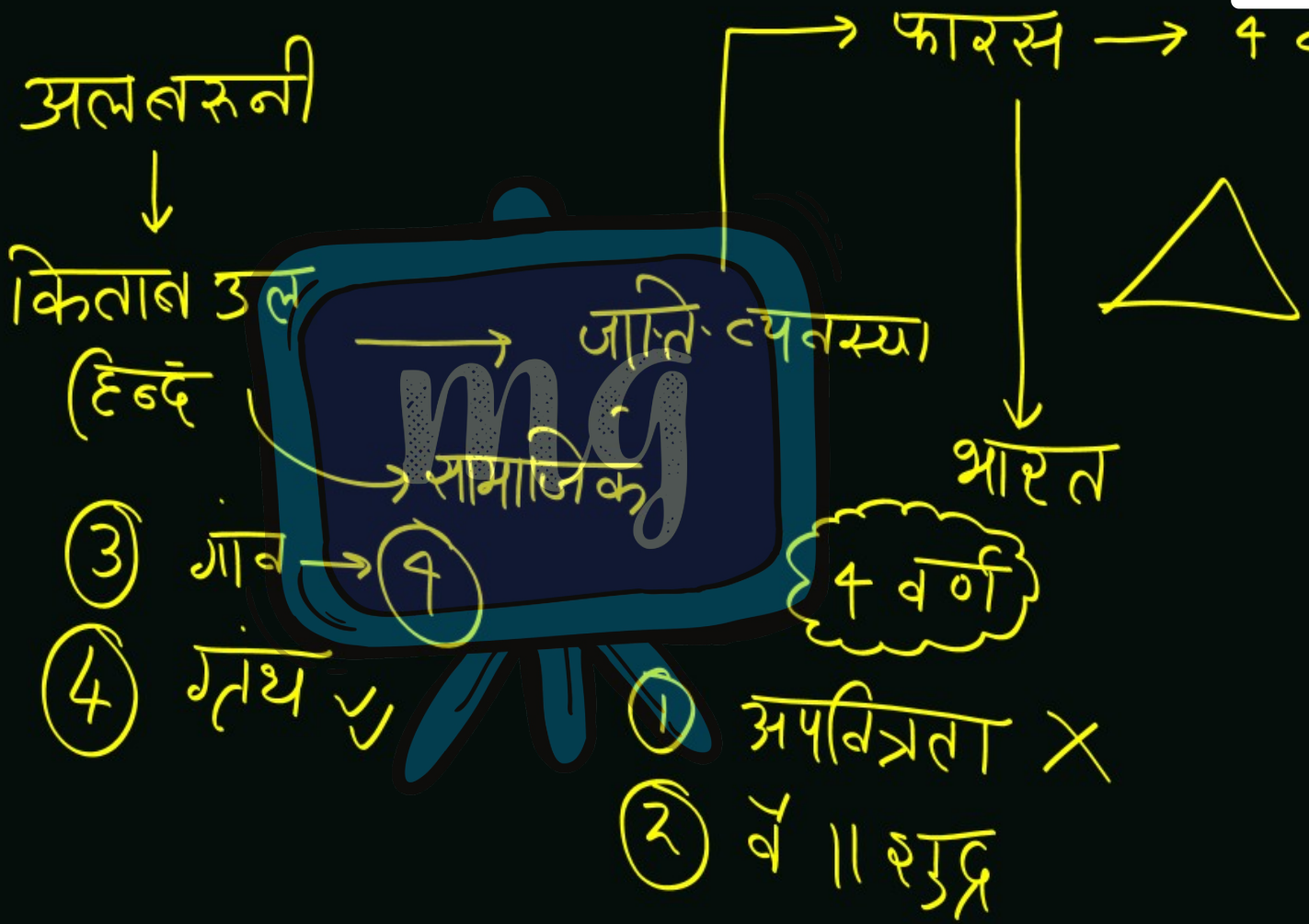
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- वास्तविक जीवन में यह व्यवस्था इतनी कठोर नहीं थी।
- समाज में सबसे निम्न ''अंत्यज श्रेणियों'' से अपेक्षा की जाती थी कि वह किसानों व जमींदारों को सस्ता श्रम उपलब्ध करवाये।
- अर्थात् इस वर्ग को भी आर्थिक तंत्र में स्थान दिया गया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. अलबरूनी के अनुसार भारतीय जाति व्यवस्था को समझाइये ?



Q. अल० जाति व्यवस्था मे अपनिन्नता को कैसे दूरवता था ?

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

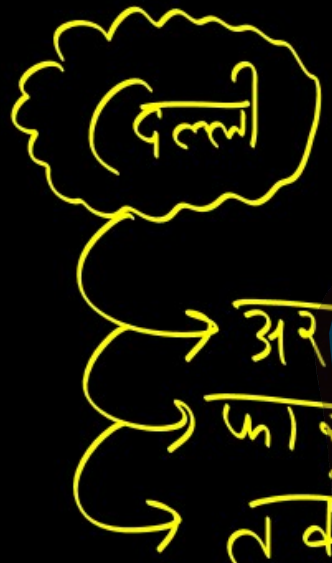


इब्न बतूता तथा अनजाने को जानने की उत्कंठा

- चौदहवीं शताब्दी में इब्न बतूता भारत आया तब तक पूरा उपमहाद्वीप वैश्विक संचार तंत्र का हिस्सा बन चुका था।
- इब्न बतूता ने स्वयं क्षेत्रों की यात्राएँ की।
- पवित्र पूजा स्थलों को देखा, कई बार काजी पद पर रहा।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- शहरी केन्द्रों की विश्ववादी संस्कृति का उपयोग, किया, जहाँ अरबी, फारसी, तुर्की व अन्य भाषाएँ बोलने वाले लोग विचारों, सूचनाओं तथा उपाख्यानों का आदान-प्रदान करते थे।
- लेखकों ने जो भी कुछ अपरिचित था उसे विशेष रूप से रेखांकित किया एवं लिखा।
- ऐसा लेखन श्रोता अथवा पाठक को सुदूर एवं सुगम्य देशों के वृत्तांतों से पूरी तरह प्रभावित करने हेतु लिखा जाता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

लेखक
↓
शोचक
=

मानव सिर जैसे गिरिदार फल

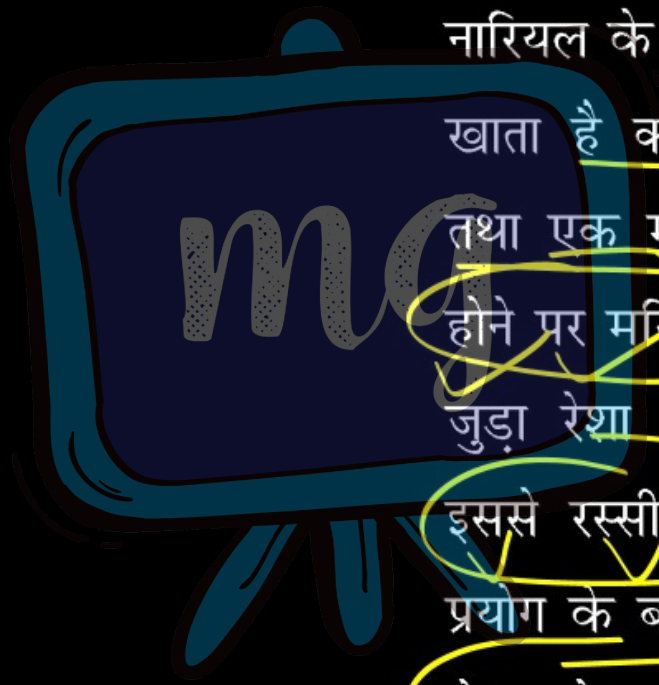
नारियल का वर्णन इब्न बतूता इस प्रकार करता है:

ये वृक्ष स्वरूप से सबसे अनोखे तथा प्रकृति में सबसे विस्मयकारी वृक्षों में से एक हैं। ये हू-बहू खजूर के वृक्ष जैसे दिखते हैं। इनमें कोई अंतर नहीं है सिवाय एक अपवाद के – एक से काष्ठफल प्राप्त होता है और दूसरे से खजूर।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



नारियल के वृक्ष का फल मानव सिर से मेल खाता है क्योंकि इसमें भी मानो दो आँखें तथा एक मुख है और अंदर का भाग हरा होने पर मस्तिष्क जैसा दिखता है और इससे जुड़ा रेशा बालों जैसा दिखाई देता है। वे इससे रस्सी बनाते हैं। लोहे की कीलों के प्रयोग के बजाय इनसे जहाज़ को सिलते हैं। वे इससे बर्तनों के लिए रस्सी भी बनाते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

पान

इब्न बतूता द्वारा दिया गया पान का वर्णन पढ़िए:

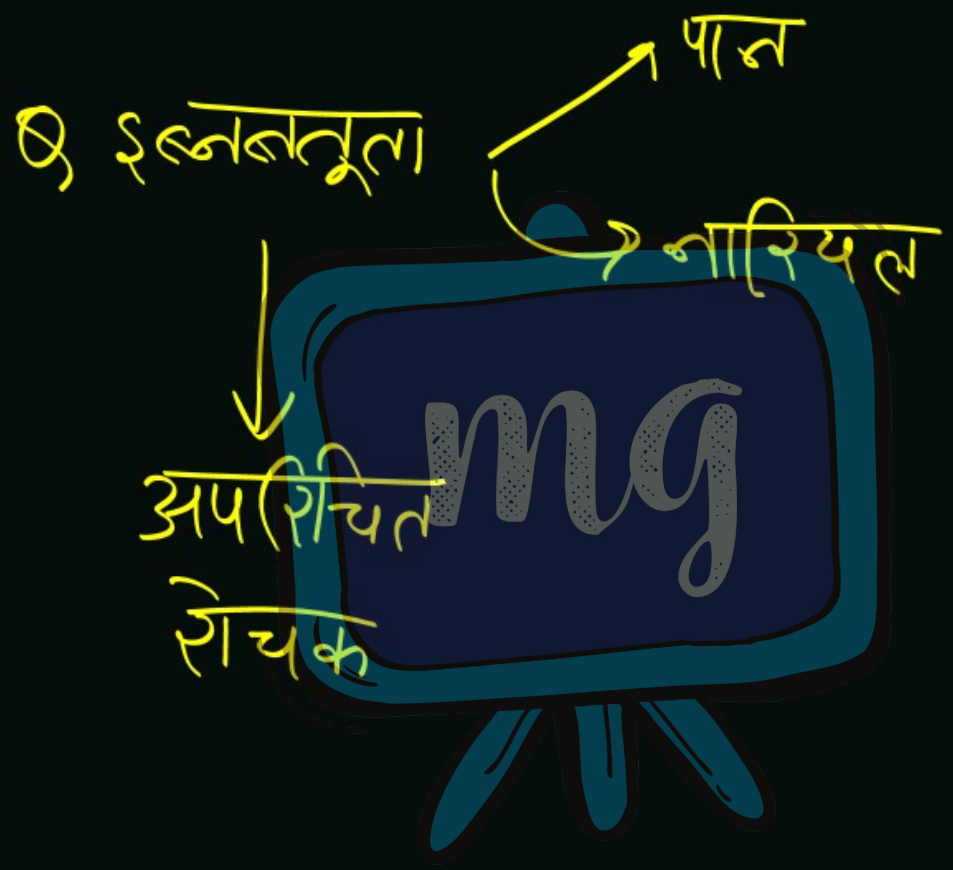
पान एक ऐसा वृक्ष है जिसे अंगूर-लता की तरह ही उगाया जाता है... पान का कोई फल नहीं होता और इसे केवल इसकी पत्तियों के लिए ही उगाया जाता है... इसे प्रयोग करने की विधि यह है कि इसे खाने से पहले सुपारी ली जाती है; यह जायफल जैसी ही होती है पर इसे तब तक तोड़ा जाता है जब तक इसके छोटे-छोटे टुकड़े नहीं हो जाते;



और इन्हें मुँह में रख कर चबाया जाता है। इसके बाद पान की पत्तियों के साथ इन्हें चबाया जाता है।

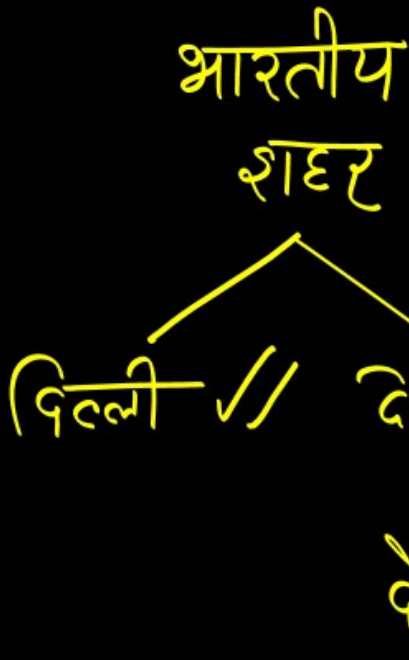
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

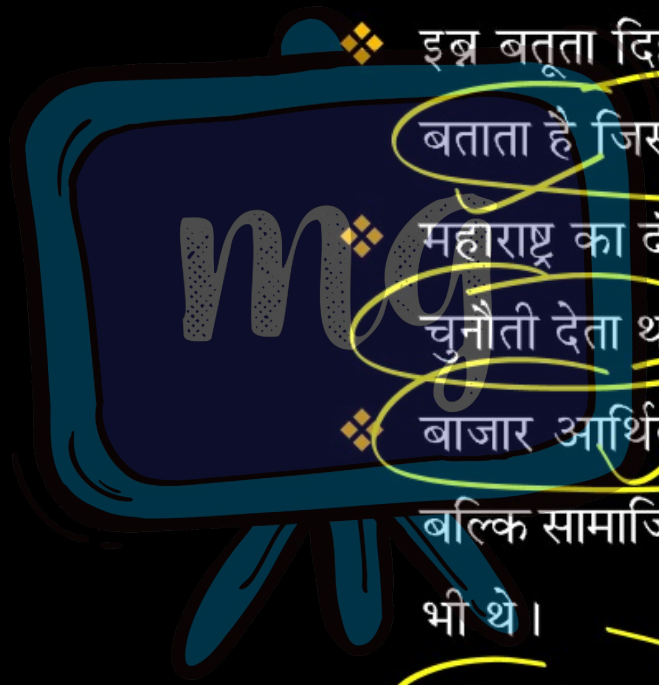


इब्न बतूता और भारतीय शहर :-

- इब्न बतूता ने उपमहाद्वीप के शहरों को उन लोगों के लिए व्यापक अवसरों से भरपूर पाया जिनके पास इच्छा, साधन व कौशल था।
- ये शहर घनी आबादी वाले व समृद्ध थे।
- युद्धों, आदि से यह शहर प्रभावित होते थे।
- अधिकांश शहरों में भीड़-भाड़ वाली सड़कें, चमक-दमक वाले रंगीन बाजार जो विविध वस्तुओं से भरे थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

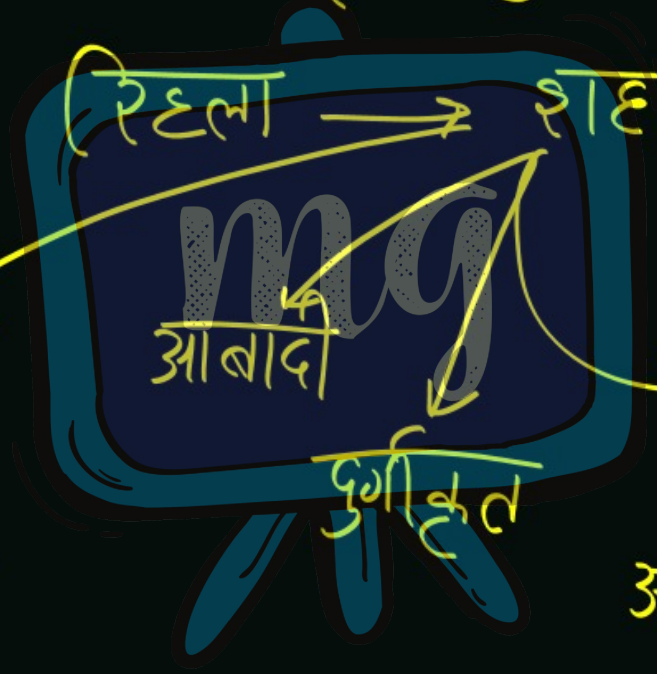


- इब्न बतूता दिल्ली को भारत में सबसे बड़ा शहर बताता है जिसकी आबादी विशाल थी।
- महाराष्ट्र का दौलताबाद भी आकार में दिल्ली को चुनौती देता था।
- बाजार आर्थिक विनिमय के स्थान ही नहीं थे बल्कि सामाजिक व आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र भी थे।
- अधिकांश बाजारों में एक मन्दिर व मस्जिद भी होते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. इब्नबतूता ने भारतीय शहरों का वर्णन किस प्रकार किया?



- दिल्ली → शहर
  - मंदिर
  - मस्जिद
  - बाजार → रंग
- दिल्ली = दौलताबाद
- आबादी
- घनीकृत
- केन्द्र → राजः
  - आर्थिक
  - सामाजिक
  - सांस्कृतिक